POSHAN Abhiyaan

पोषण पाठशाला

प्रथम वेबकास्ट का विषय

प्रकृति का उपहार
माँ का दूध
हर बच्चे का अधिकार

दिनांक : 26 मई, 2022 | **समय :** मध्यान्ह 12:00 बजे से अपरान्ह 2:00 बजे तक

राज्य स्तर के विषय विशेषज्ञों द्वारा

'माँ का दूध - हर बच्चे का अधिकार'

विषय पर विडियो कॉन्फ्रेंसिंग एवं वेबकास्ट के माध्यम से गर्भवती एवं धात्री महिलाओं हेतु परामर्श सत्र

प्रदेश के सभी आंगनबाड़ी केन्द्रों पर वेबकास्ट के माध्यम से इस कार्यक्रम का सजीव प्रसारण किया जाएगा। आंगनबाड़ी केन्द्र पर पंजीकृत गर्भवती एवं धात्री महिलाएं अपने आंगनबाड़ी केन्द्र पर उपस्थित होकर सत्र में प्रतिभाग करें।

जन-मानस हेतु वेबकास्ट लिंकः
https://webcast.gov.in/up/icds

बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग, उत्तर प्रदेश

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

पोषण पाठशाला दिनांक 26.05.2022 की संक्षिप्त रूपरेखा (Concept Note)

विभाग की सेवाओं, स्वास्थ्य एवं पोषण शिक्षा पर लाभार्थियों एवं जन समुदाय को जागरूक करना बाल विकास विभाग की एक आवश्यक सेवा है। इसी को ध्यान में रखते हुए विभाग द्वारा प्रतिमाह **"पोषण पाठशाला"** नामक कार्यक्रम अयोजित किये जाने का निर्णय लिया गया है, जिसका थीम **"शीघ्र स्तनपान–केवल स्तनपान"** है। मई माह में प्रथम पोषण पाठशाला का आयोजन दिनॉक 26–5–2022 (अपरान्ह 12 बजे से 02 बजे तक) किया जा रहा है, पोषण पाठशाला के अंतर्गत उक्त थीम पर विषय विशेषज्ञों द्वारा चर्चा होगी और प्रतिभागियों के सवालों के जवाब भी दिये जाएँगे।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण –5 (NFHS 5) के अनुसार उत्तर प्रदेश में शीघ्र स्तनपान (जन्म के एक घंटे के अंदर नवजात शिशु को स्तनपान) का दर 23.9 प्रतिशत है और छह माह तक के शिशुओं में "केवल स्तनपान" का दर 59.7 प्रतिशत है । शिशुओं में शीघ्र स्तनपान व केवल स्तनपान, उनके जीवन की रक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है, परंतु ज्ञान के अभाव और समाज मे प्रचलित विभिन्न मान्यताओं व मिथकों के कारण यह सुनिश्चित नहीं हो पाता है, जो कि उनके स्वास्थ्य के लिए घातक सिद्ध होता है । इसके लिए माह मई व जून में प्रदेश में **"NO WATER,ONLY BREAST FEEDING CAMPAIGN"** (पानी नहीं, केवल स्तनपान अभियान) चलाया जा रहा है।

मॉ का दूध शिशु के लिए अमृत के समान है। शिशु एवं बाल मृत्यु दर में कमी लाने के लिए यह आवश्यक है कि जन्म के एक घंटे के अंदर शिशु को स्तनपान प्रारम्भ करा देना चाहिए व छह माह की आयु तक उसे केवल स्तनपान कराना चाहिए। परंन्तु समाज में प्रचलित विभिन्न मान्यताओं व मिथकों के कारण केवल स्तनपान सुनिश्चित नहीं हो पाता है। मॉ एवं परिवार को लगता है कि स्तनपान शिशु के लिए पर्याप्त नहीं है और वह शिशु को अन्य चीचे जैसे कि घुट्टी, शर्बत, शहद, पानी, पिला देती है। स्तनपान से ही शिशु की पानी की भी आवश्यकता पूरी हो जाती है। इसलिए शीघ्र स्तनपान केवल स्तनपान की अवधारणा को जन जन तक पहुॅचाना है।

वयस्कों की तरह उसे भी पानी की आवश्यकता होगा। अतः उसे पानी देने का प्रचलन बढ़ जाता है और शिशुओं में केवल स्तनपान सुनिश्चित नहीं हो पाता है। साथ ही शिशु में दूषित पानी के सेवन से संक्रमण से दस्त आदि होने की भी संभावना बढ़ जाती है।